

Sem - III
Paper - V

Buddhist Ethics - Eight Fold Path (1)

बौद्ध दर्शन - चार आर्थ सत्य

बुद्ध ने अपने तृतीय आर्थ सत्य में बतलाया है कि दुःख से मुक्ति मिल सकना है अर्थात् मित्राण की प्राप्ति हो सकती है। जब पुन उठता है कि मित्राण की प्राप्ति कैसे संभव है? बुद्ध ने अपने चतुर्थ आर्थ सत्य में उसी मार्ग की चर्चा की है। जिसे अपनाकर मित्राण की प्राप्ति की जा सकती है। इस मार्ग को दुःख निरोध मार्ग कहा जाता है। इस मार्ग में आठ चरण हैं इसलिए इसे अष्टांगिक मार्ग (Eightfold Path) कहा जा सकता है। अथ इस मार्ग के आठ अंगों को अलग अलग से व्याख्या किया जाएगा।

1) सत्यक दृष्टि (Right view)

बुद्ध ने बतलाया कि दुःख और संसृति का मूल कारण अविद्या है। अविद्या के कारण ही असत्य दृष्टि की उत्पत्ति होती है। अविद्या ही हमारे दुःखों का मूल कारण है। अविद्या से ही मिथ्या-दृष्टि उत्पन्न होती है और इस अनित्य, दुःख, और अनात्म, को विलय, सुख और आत्मरूप समझ बैठते हैं। इस दृष्टि को दौड़कर बदलना के अपारंपरिक स्वरूप पर सतत ध्यान रखना चाहिए। इसी को सत्यक दृष्टि कहते हैं।

2) सत्यक संकल्प (Right Resolve)

सत्यक संकल्प सदैव सत्यक संकल्प रूपान्तरित होता है। इस के चार आधे सत्यों का जीवन में गालन करने का निश्चय को सत्यक संकल्प है। आधे सत्यों के ज्ञान से मानव अपने को सामाजिक तथी बन सकता है जब तक उनके अनुसार जीवन व्यतीत करता है। बुद्ध ने बतलाया कि जो मित्राण चाहते हैं उन्हें चाहिए कि राग, द्वेष तथा मोह इत्यादि को त्यागने का संकल्प करें। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जो अशुभ है उसे न करने का संकल्प ही सत्यक संकल्प है। इसमें ध्यान और परीक्षा का भावना सम्मिलित है।

3) सत्य वाक् (Right Speech)

सत्य वाक् संकल्प के बाद सत्य वाक् का रूपान्तरण होता है। कोई व्यक्ति सत्य वाक् का पालन तभी कर सकता है जब वह निष्कल सत्य एवं प्रिय बोलता हो। सिर्फ सत्य वचनों का प्रयोग ही सत्य वाक् के लिए आवश्यक नहीं है। जिस व्यक्ति से दूसरों का कष्ट हो उसका परिष्कार करना पड़ना पड़ेगा। इसलिए सत्य एवं प्रिय वचनों का प्रयोग ही सत्य वाक् है।

4) सत्य कर्माणि (Right Action)

सत्य कर्मों को सत्य संकल्प को केवल पचन में ही उद्देशित नहीं करना चाहिए बल्कि उसके अनुसार कर्म भी करना चाहिए क्योंकि सत्य भाषा एवं प्रियवाणी देने के आवश्यक कोई व्यक्ति कुछ पूरे कर्मों को अपना कर सम्पन्न हो सकता है। अतः सत्य वाक् सत्य कर्माणि के पालन का आदेश दिया है। सत्य कर्माणि का अर्थ होगा पूरे कर्मों का परिष्कार। पूरे के अनुसार पूरे कर्म तीन हैं - दंडा, स्तेय तथा शर्मिष्ठ-योग। उनके अनुसार काहेला अस्तेय तथा शर्मिष्ठ संपन्न ही सत्य कर्माणि हैं। अतः अपने अन्तर्गत में कुपार लाने के लिए इनके अनुसार कर्म करना चाहिए।

5) सत्य आजीविका (Right Livelihood)

सत्य आजीविका का अर्थ है सत्यवादी और ईमानदारी से जीवन निर्वाह करना। कुछ ने कहा है कि निर्वाण प्राप्ति के लिए कटुवचन एवं पूरे कर्मों के परिष्कार के साथ ही साथ जीवन - निर्वाह के लिए कष्टों का त्याग ही परमावश्यक है। जो खाद, शिखर, लुट आदि प्रकार के अस्वच्छ, अशुभ, अवाञ्छित से जीविका - निर्वाह करना महान पाप है। अतः कुछ कहते हैं कि जीवन निर्वाह सत्यवादी एवं ईमानदारी से करना चाहिए।

⑥ सत्पक्व व्यापाय (Right Effort)

व्यापाय का अर्थ है निर्वर्ण कार्य पर पुनर्गति के लिए सतत उपलक्षणीय रहना। यह कोई आवश्यक नहीं है कि उपरोक्त पाँच मार्गों को अभ्यास कर निर्वर्ण की प्राप्ति हो जाए क्योंकि यहाँ तक पहुँचने के बाद भी व्यक्ति अपने गुरु सेहारा के चले उचित मार्ग से चरक सकता है इसलिए जब तक मन को पूरी भावनाओं से मुक्त नहीं कर लिया जाए तब तक निर्वर्ण की प्राप्ति असंभव है। अतः गुरु ने सत्पक्व व्यापाय के लिए निम्नलिखित चार विषयों का पालन आवश्यक है।

- ① मन से पूरी भावनाओं का निवास देना चाहिए।
- ② मन से पूरी भावनाओं को आने से रोकना चाहिए।
- ③ मन में उत्पन्न हुई अचछी भावनाओं को काप्य रखने के लिए सतत उपलक्षणीय रहना चाहिए।

⑦ सत्पक्व स्मृति (Right Mindfulness)

इसके द्वारा इस बात पर जोर दी जाती है कि निर्वर्ण की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को अभी तक दिन विषयों का ज्ञान दो भुजा है उन्हें हमेशा याद रखना पर आवश्यक है। संसार की वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप के विषय में जागरूक रहना ही सत्पक्व स्मृति है। गुरु का मत यह था कि जो चीज जैसी है उसे उसी रूप में समझना एवं याद रखना चाहिए। यहाँ इस बात की शंका भी मालूम हुई कि इस विचार में कोई नवीनता नहीं है। क्योंकि यह पहले ही बताया गया है कि हमें हमें सही ज्ञान रखना चाहिए लेकिन गुरु ने सत्पक्व स्मृति को एक अलग मार्ग माना है। क्योंकि हम अपने अन्दर व्याप्त अनिष्टता के कारण वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप के विषय में धूल जा सकते हैं। इसलिए इस गुरु ने कहा है कि हमें हमेशा वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को याद रखना चाहिए अर्थात् हमें हमें इन सभी को सांगठिक समझना चाहिए लेकिन अनिष्टता के कारण हमें उगिया के चोजी को स्थायी समझते हैं।

इसलिए मनुष्यों में चीजों के लिए मोह होता है जिसके परिणाम स्वरूप धर्म दुर्लभ होता है। इसलिए गुरु ने बताया है कि व्यवहार पाप रखना चाहिए कि दुनिया को चीजें नाशवान हैं इसलिए नाशवान वस्तुओं की संख्या ही लम्पक रूढ़ि है।

8. सूपक समाधि (Rigat Concentration)

उपर लिखे साधन-

मांगों का अनुकरण करने के बाद रूप में समाधि लाने की योग्यता आती है। चित्र की एकाग्रता को समाधि कहा जाता है, चित्र की अलग-अलग विवेचना इस प्रकार की जाती है।

(1) समाधि में प्रथम अवस्था में साधक को उद्बुद्ध के चार आर्ष-संज्ञा का प्रकाश एवं चिन्तन करना पड़ता है। यह तभी एवं चित्र की अवस्था है। अनेक प्रकार के संशय संशय के मन में उत्पन्न होते हैं, जिनका निराकरण वह स्वयं करता है।

(2) प्रथम अवस्था के बाद सभी प्रकार के संदेह दूर हो जाते हैं। जगत् सत्य के प्रति सद्भाव का विकास होता है। स्वप्न की दूसरी अवस्था में तभी चित्र की आवश्यकता नहीं महसूस होती है। इस अवस्था में अन्तर्ज्ञान और शांति का अनुभव होता है।

(3) समाधि की तीसरी अवस्था का आरम्भ तब होता है जब आनन्द एवं शांति की चेतना के प्रति उदात्तता का चार आनन्द होता है। इसमें वैराग्य की विचार उत्पन्न होता है; लेकिन इस अवस्था में शारीरिक आराम का ज्ञान विद्यमान रहता है।

(4) समाधि की चौथी अवस्था में शरीर के आराम एवं शांति का भाव नहीं रहता हो जाता है। अन्तर्ज्ञान पूर्ण शांति, पूर्ण विराग्य पूर्ण सुख-दुःख से रहित हो यह विचारों की अवस्था है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि साधक को विचारों में डूबा जाता है। विचारों का प्रकाश-प्रभाव यह पूर्ण प्रकाश की अवस्था है।

(5)

बुढ़ के क्वाण्ड अपरॉगिक भागी को प्रसा, शील,
एवं समाधि नापक तीन भाग बंंगी में विभाजित किया
जा सकता है। प्रथम दो भागों को प्रसा और
हं क्षत्रिय दो भागों को समाधि तथा क्षत्रिय को चार-
भागों को शील के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

X